नवीन

चित्रकूट तीर्थ दर्शन

एवं
गाईड बुक
रंगीन चित्रो
सहित

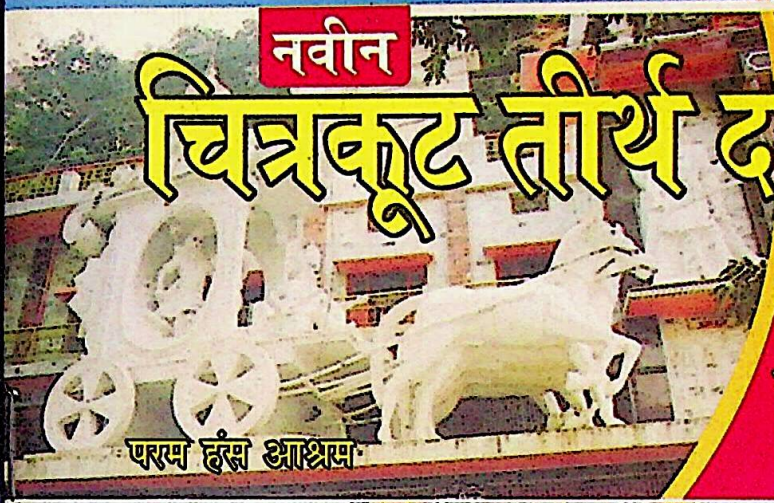
परम हंस आश्रम

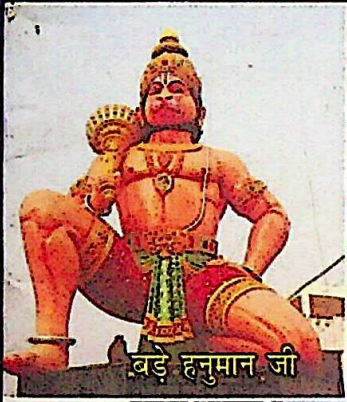
बड़े हनुमान जी

कामता नाथ जी

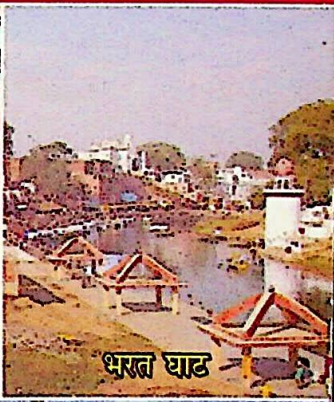
भरत घाट

मूल्य ₹ 30/-

॥श्री कामद गिरये नमः ॥

चित्रकूट-तीर्थ दर्शन

(रंगीन चित्रों सहित)

(इस पुस्तक के सर्वाधिकार लेखकाधीन है)

मूल्यः 30 रुपये

ज्ञान दर्शन सूची

रामघाट से मुख्य दर्शनिये स्थानों की दुरियाँ कि०मी० में

		कि०मी०
1.	कक	
2.	चित्रकूट तीर्थ दर्शन पर लेखक के विचार	
3.	चित्रकूट का स्थलीय ज्ञान	
4.	चित्रकूट उ०प्र एवं म०प्र० आवासीय व्यवस्था	
5.	रामघाट	0
6.	मतगयेन्द्र नाथ	0
7.	राघव प्रयाग	0
8.	पर्णकुटी	0
9.	यज्ञवेदी	0
10.	गो० तुलसी दास	0
11.	गोस्वामी जी का मन्दिर	0
12.	विजावर मंदिर	0
13.	बालाजी मन्दिर	0
14.	बूड़े हनुमान जी	0
15.	भरतघाट	0
16.	कामदगिरि	2
17.	परिक्रमा का महत्व	5
18.	अमावस्या का महत्व	
19.	प्रमुख द्वार	2
20.	नदियों का दर्शन	
21.	साक्षी गोपाल	3
22.	ब्रह्म कुण्ड	4
23.	लक्ष्मण पहाड़ी	5
24.	भरत मिलाप	5
25.	पीलीकोठी	6
26.	राम सैया	8
27.	गौशाला	8
28.	वनदेवी आश्रम	2
29.	हनुमान धारा	3
30	सीतारसोई	3
31	गोयनका घाट	1
32.	प्रमोदवन	1
33.	लक्ष्मीनारायण मन्दिर	1

संक्षिप्त परिचय

चित्रकूट प्राचीन काल से ऋषियों मुनियों तपस्वियों की अदभुत साधना स्थली रही है एक तरफ जहाँ मन्दाकिनी गंगा की कल-कल, छल-छल की मधुर ध्वनि, पक्षियों का कलख, वन्य पशुओं की भयावह गर्जना, और दूसरी तरफ नदी वन पर्वत झरने और गुफाये अपनी प्राकृतिक सौन्दर्यता से हर किसी संसारिक से ऊवे प्राणियों को सुख शान्ति की दृष्टि से को मन प्रभावित करती है।

चित्रकूट अध्यात्मिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण केन्द्र स्थली है जिसको लक्ष्य बनाकर महर्षि, विद्वान, कवि एवं साहित्यकार अपनी उन्मुक्त लेखनी से अपने विचार भावनाओं की अभिव्यक्ति की है। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि, गोस्वामी तुलसीदास, रहीम कवि तथा तानसेन जैसे ईश्वर भक्तों ने इस पावन धरती से अध्यात्मिक उर्जा प्राप्त किया है कविवर रहीम ने कहा है।

दो०- चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध नरेश।
जापर बिपदा परत है सो आवत यहि देश॥

गोस्वाती तुलसीदास जी ने ईश्वर का दर्शन चित्रकूट में साक्षात् प्राप्त किया है जिसके सम्बन्ध में गोस्वामी जी ने कहा है।

चित्रकूट के घाट में भइ संतन की भीर।
तुलसीदास चन्दन घिसै तिलक देत रघुवीर॥

इतना की नही गोस्वाती तुलसीदास जी ने चित्रकूट की महिमा पर लिखा है।

भव भुजंग तुलसी नकुल, हसत ज्ञान हर लेत।
चित्रकूट एक औषधि, चितवत करत सचेत॥

चित्रकूट के स्वरूप पर चित्रकूट महात्म्यम् में कहा गया है।

सुवर्ण कूटं, रजतामि कूटं, माणिक्य कूटं मणिरत्न कूटं।

अनेक कूटं बहुवर्ण कूटं, श्री चित्रकूटं शरणं प्रपद्ये॥

इस प्रकार चित्रकूट में विभिन्न प्रकार की पर्वत श्रेणियों से युक्त चित्रकूट है। गोस्वाती तुलसीदास जी ने कामदगिरि के सम्बन्ध में लिखा है।

कामदगिरि भै रामप्रसादा।

अवलोकत अपहरत विषादा॥

अर्थात् कामदगिरि श्री राम की कृपा से इतने पवित्र हो गये जिनके दर्शन मात्र से दु:ख दूर हो जाते है। जिसको निम्न श्लोक द्वारा और भी स्पष्ट किया गया है नं० –

चित्रकूटालयं राम इन्द्रानन्द मन्दिरम्।

वन्दे श्री परमानन्दं भक्तानां अभयप्रदम्॥ पद्म पुराण

चित्रकूट भगवान श्रीराम का घर है जो इन्द्र के निवास का जहाँ सुख का अनुभव होता है। जो भक्तों को परम आनन्द एवं अभय प्रदान करता है। इसी कारण तुलसी दास जी लिखते है।

चित्रकूट सब दिन बसत प्रभु सिय लखन समेत।

रामनाम जप जाप करि तुलसी अभिमत देत॥

इसी कारण चित्रकूट की महिमा का गान पर्वतराज हिमालय भी करते हैं। क्योंकि कहा गया है–

शैल हिमांचल आदिक जेते, चित्रकूट जस गावहि तेते।

वास्तव में चित्रकूट गिरि सर्वश्रेष्ठ है।

चित्रकूटों गिरि: श्रेष्ठ: श्री राम पदभूषिता।

—

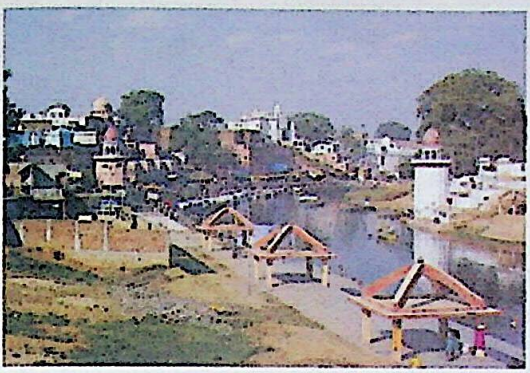

भरत घाट Bharat Ghat

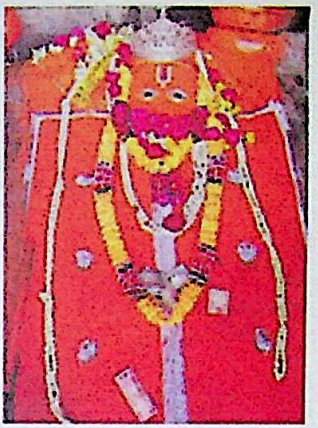

हनुमान धारा
Hanuman Dhara

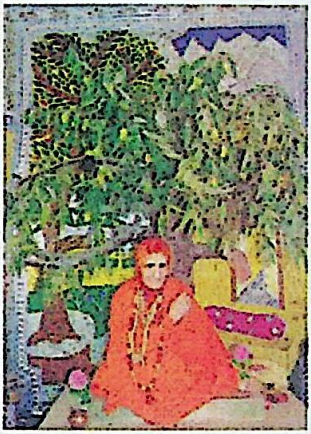

स्वर्गा आश्रम पीली कोठी
Swarga Ashram Pili Kothi

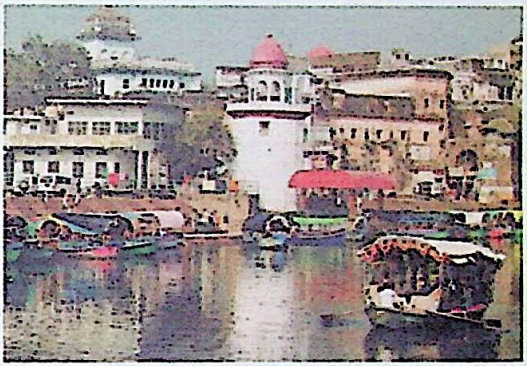

राघव प्रयाग घाट
Raghav Prayag Ghat

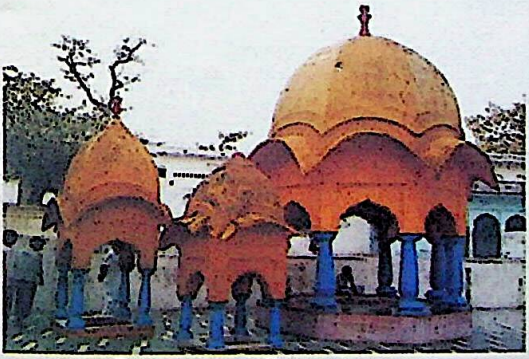

भरत मिलाप चरण चिन्ह Bharat Milap

वन देवी चरण अंक
Van Devi Charan Ank

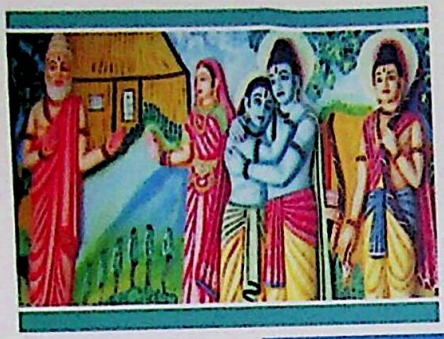

भरत भेंट
Bharat Bhet

बिजावर मंदिर
Bijawar Mandir

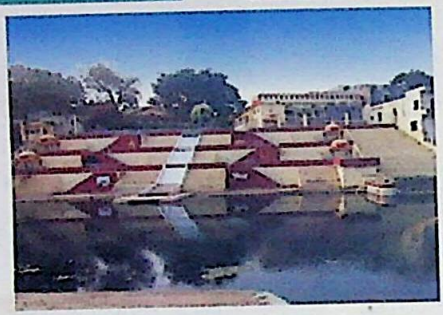

गोयनका घाट
Goyanka Ghat

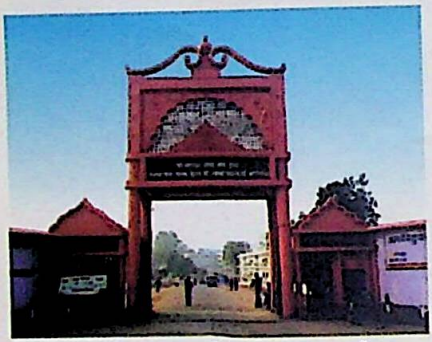

जानकी कुण्ड चिकित्सालय गेट
Janki Kund Chikitsalaya Gate

आरोगयधाम
Aarogya Dham

जुगल किशोर जी Jugal Kishore Ji

बहराके हनुमान Bahrake Hanuman

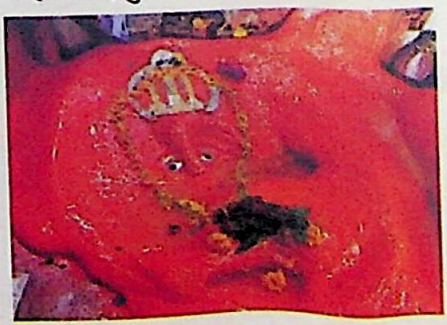

धर्मशालों, लाज अखाड़े एवं संत मन्दिर है। जहाँ लोग आश्रम लेते रहते है।

1. जैपुरिया भवन – सीतापुर चित्रकूट
2. श्री अग्रसेन भवन – रत्नावली मार्ग रामघाट चित्रकूट 07670-265350, 09451917259
3. श्री कादमदगिरी भवन – रत्नावली मार्ग रामघाट चित्रकूट 07670-265357
4. विनोद लॉज – रत्नावली मार्ग रामघाट चित्रकूट 07670-265301
5. लक्ष्मी भवन – रत्नावली मार्ग रामघाट चित्रकूट 07670-265456
6. बृज विहार – एस्.आफिस के सामने (म.प्र.) चित्रकूट 9918837554

रामघाट

अयोध्या से चित्रकूट वन यात्रा काल से श्रीराम, लक्ष्मण एवं जानकी के सहित स्नान किया था और क्षेत्रपाल भगवान शिव मत्यायेन्द्रनाथ जी की पूजा की थी तभी यह घाट रामघाट के नाम से जाना जाता है।

श्लोकः- तीर्थ वृन्दानि सर्वाणि, च पर्वत वनानि च।
स्नात्वा, मन्दाकिनीतोये यात्रा कुर्वन्ति संघसः ॥

उक्त श्लोक चित्रकूट महात्म्यम् में लिखा है सिमें पर्वत, वन और मन्दाकिनी नदी में स्नान कर एक साथ सभी कामदगिरि का परिक्रमा करते है। यहाँ चित्रकूट धाम नगर पालिका द्वारा गंगा आरती का

कार्यक्रम प्रतिदिन सायं सम्पन्न किया जाता है। इस मन्दाकिनी में चार वेद धाराओं में कैलाश टीले से आकर मिलते हैं जहाँ घृतकुल्या, मधुकुल्या, दधिकुल्या तथा शर्करा कुल्या के रूप चार वेद चार धाराओं के रूप में मन्दाकिनी में मिलते हैं।

घृतकुल्या, मधुकुल्या दधिकुल्या तथैव च।
कुल्या शर्करायाश्च भविष्यन्ति च तत्रतः॥

मतायेन्द्र (शिव) जी

यह मन्दिर रामघाट के चार मन्दिर कैलाश टीले पर ऊँचाई पर बना हुआ है। जब श्रीराम वन गमन के समय यहाँ आये उस समय इनकी पूजा की और निवास करने की अनुमति लिया था तब पर्णकुटी बनायी, शिव जी की स्थापना ब्रह्मा जी ने क्षेत्रपाल के रूप में की थी गोस्वामी जी ने मानस में लिखा है कि भरत जी सेना के सहित चित्रकूट आ रहे हैं, ऐसा स्वप्न जानकी जी को जब हुआ तथा तब उस स्वप्न की शान्ति हेतु शिव जी का जानकी जी ने पूजन किया था।

ततः स्वयं भुवो देवः सर्वलोक नमस्कृत।
क्षेत्रपालं च तत्क्षेत्रे कर्तु चैव मनोदधो॥

महालिङ्गं प्रतिष्ठाप्य शाम्भवं भूरि भावनः।
मतायेन्द्रेति नामेदंक्षेत्रपालं सभादधे॥

ये नराः प्रातरुत्थायतीर्थ कैलास संज्ञकं।
स्नात्वालिङ्गं समर्चंक्ति मतगेन्द्रित नामकम्॥

पुत्रपौत्रादि सम्पत्ति मायुरारोग्यमेव च।
एवमुक्तो विधातारं स्थितं चक्रे महेश्वरः॥

राघव प्रयाग घाट

यहाँ पर तीन नदियाँ आकर मिलती है मन्दाकिनी सरस्वती, पयस्वनी अतः जब श्री राम को पिता महाराज दशरथ की मृत्यु का समाचार मिला था तब उन्होंने यही पिण्डदान किया था तभी से इसे राघव प्रयागनाम से जाना जाता है। प्रयाग राज तीर्थ से इसका महत्व अधिक है। सरस्वती गंगा में स्नान के विषय में निम्न श्लोक दृष्टव्य है -

सरस्वती पुण्यतमा नदी त्रैलोका पावनी।

समुद्रभूता पुण्यतामा महापातक नाशिनी ॥ वृ.चि.म

उपर्युक्त श्लोक से स्पष्ट होता है कि सरस्वती नदी में स्नान करने से महान पापों का नाश हो जाता है। मन्दाकिनी पापों के समूह को भक्षण करने वाली है। पयस्वनी और सरस्वती यहाँ गुप्त रूप में मिलती है।

सुरसरि धार नाम मन्दाकिनि।

सो सब पातक पोतक डाकिनि ॥

पर्णकुटी

भगवान श्री राम ने बनवास काल के साढ़े ग्यारह वर्ष का समय इस स्थान पर स्वनिर्मित कुटिया में व्यतीत किया था।

यज्ञवेदी

सतयुग में ब्रह्मा जी ने इस स्थान पर 108 कुण्डी यज्ञ की पूर्णाहुती

की थी जो यज्ञवेदी 30 धनुष के प्रमाण पर निर्मित की गयी थी यही यज्ञ के क्षेत्रफल के रूप में मतगयेन्द्र जी की स्थापना का कारण है।

इसी प्रकार ब्रह्मा द्वारा स्थापित यह भगवान शिव 108 शिवलिंग में इनकी भी गणना है। इस यज्ञवेदी पर भरत जी ने जानकी सहित श्रीराम को देखा था

श्लोक-

अचले चित्रकूटे च मनों बांछा फलं लभेत्।

अस्मिन क्षेत्रे महापुण्ये धर्म कामार्थ मोक्षते ॥ वृ.चि.म.

नार्यावर्त समो देशो न ब्रह्म सदृशी पुरी।

न राघव समोदेवः क्वापि ब्रह्माण्ड गालके ॥ वृ.चि.म.

गोस्वामी तुलसीदास जी की मूर्ति

गोस्वामी तुलसीदास जी की मूर्ति रामघाट में चार स्तम्भों के ऊपर बनी हुई है। जिसे चित्रकूट के जिलाधिकारी श्री जगन्नाथ सिंह जी ने स्थापित कराया था जिनकी पूजन अर्चना होती है।

तुलसी दास मन्दिर

गोस्वामी तुलसीदास जिस पीपल के नीचे बैठकर चन्दन घिसके लगा रहे थे और तोता रूपी हनुमान जी नें संकेत रूप में कहा था-

दोहा-

चित्रकूट के घाट में भइ सन्तन की भीर।

तुलसीदास चन्दन घिसै तिलक देत रघुवीर ॥

जिसे सुनकर श्रीराम के तुलसीदास जी ने दर्शन किये थे और यही रामकथा पर प्रवचन किया करते थे।

विजावर मंदिर

विजावर मंदिर का निर्माण विजावर रियासत की महारानी रतन कुमारी जी ने कराया था जो इस समय मध्यप्रदेश स्थित मन्दाकिनी के उस पार रामघाट के सामने दृष्टिगोचर होता है।

बालाजी मंदिर

यहाँ पर बालाजी महाराज का मंदिर है जहाँ मुगल बादशाह औरंगजेब 1750 में चित्रकूट आया था और मार्ग में आने वाले मूर्तियों और मंदिरों को तोड़ता था जिसमें कुछ चमत्कार दिखता था उसी को वह मान्यता देता था। यहाँ उसे चमत्कार दिखा उसने ताम्रपत्र में मंदिर के महत्व को लिखा है जो आज भी देखा जा सकता है। यहाँ बालक दास जी महाराज की कुटी थी जहाँ पर सेना के लोगों से सन्त से अभद्रता की थी जिससे उनके पेट में पीड़ा हुई तब बाला जी के महत्व को समझा।

बूड़े हनुमान जी

यह प्राचीन हनुमान जी दक्षिणाभिमुख विराजमान है जिन्हें बूढ़े हनुमान के रूप में जाना जाता है। जो चित्रकूट महात्मय् में 108 तीर्थो में आता है यह सीतापुर वस्ती के पूर्व मन्दाकिनी के किनारे है, कहा

जाता है कि यह मूर्ति मंदाकिनी में डूबी हुई थी जिसे किसी संत द्वारा निकाल कर स्थापित किया गया जो संगमरमर की है।

भरतघाट

भरतघाट राघव प्रयाग के ठीक लगा हुआ है यहाँ पर बाल्मीकि मुनियों ने तपस्या किया था यहाँ श्रीराम को मनाने के समय भरत जी ने अपने साथ आये सभी अनुचरों को ठहराया है तभी से इसे भरतघाट के नाम से जाना जाता है।

कामदगिरि

चित्रकूट तीर्थ में कामदगिरि (रामगिरि) बहुत ही पवित्र पर्वत है। इसका वर्णन गोस्वामी तुलसीदास जी ने नकी महता पर लिखा -

कामदगिरि भे राम प्रसादा।
अवलोकत अपहरत विषाद॥

कामदगिरि की जो श्रद्धा भक्ति से दर्शन एवं परिक्रमा करते है उनके सभी कार्य पूरे होते है और मनोकामना की सिद्धि होती है। यथा चित्रकूट महात्म्यम् में लिखा है-

कामदः सर्व जतूनां कामधेनो पतिस्तथा।
तेनायं चित्रकूटों अमौ कामद नाम संज्ञकः॥

चित्रकूटः पर्वतः श्रेष्ठः मणि कांचन चर्चितः।
विराजते महाराज बृह्मा रूद्रादि पूजितः॥

सुवर्ण कूटं रजताभि कूटं माणिक्य कूटं मणिरत्न कूटं।
अनेक कूटं बहुवर्ण कूटं श्री चित्रकूटं शरणं प्रपद्ये॥

परिक्रमा का महत्व

यह परिक्रमा मार्ग रामघाट से 2 कि.मी. दूरी पर है। परिक्रमा 7 कि.मी. लगाना पड़ता है।

तीर्थ वृन्दानि सर्वाणि स पर्वत वनानि च।

स्नात्वा मन्दाकिनी तोये यात्रा कुर्वन्ति संघशः ॥ वृ.चि.म.

उपर्युक्त श्लोक का तात्पर्य है कि सम्पूर्ण तीर्थ का समूह और पर्वत वन यह भी सभी मन्दाकिनी नदी में स्नान करके कामदगिरि जी की परिक्रमा करते है उसी परम्परा के अन्तर्गत देश देशान्तर के यात्री श्री कामदगिरि की पूजा और परिक्रमा करते है।

लेटी साष्टाडगं परिक्रमा का फल

लेटी साष्टाडगं परिक्रमा ऋचीक मुनि द्वारा सुकण्ठ नाम के गन्धर्व को श्राप दे दिया गया था उसके उद्धार हेतु भरद्वाज मुनि ने उसे साष्टाडगं परिक्रमा करने को कहा था तभी वह ऐसी परिक्रमा करके अपने योनि को प्राप्त हुआ और श्राप मुक्त हो गया।

!अमावस्या एवं पूर्णिमा के परिक्रमा का फल!

जो मनुष्य कामतानाथ जी परिक्रमा, मन्दाकिनी में स्नान करके अमावस्या एवं पूर्णिमासी को करता है वह अश्वमेघ यज्ञ के फल को प्राप्त करता है।

यथा -

गिरिराजः चित्रकूटो यत्र मंदाकिनी नदी।

स्नात्वा मन्दाकिनी नीरे गिरे कृत्वा प्रदक्षिणः ॥

अश्वमेघ फल प्रप्त गति चपपरमावृजतां।
अमावस्या पौण मास्यां सर्व देवा महर्षयः॥

स्नात्वा मन्दाकिनी नीरे गिरे कृत्वा प्रदक्षिणम्।
मुक्तिशापो हरिः गायन विचरस्य यथा सुखम्॥

प्रमुख द्वार

कामदगिरि परिक्रमा में कामदगिरि में चार द्वार बताये गये है जिसमें प्रमुख द्वार से परिक्रमा प्रारम्भ की जाती है यही पूजा अर्चना भी की जाती है। यह स्थान संतों के द्वारा संचालित है जो ट्रस्ट के रूप में कर दिया गया है द्वितीय द्वार तृतीय द्वार और चतुर्थ द्वार क्रमशः चारो दिशाओं में प्राप्त होते है इनका सभी का महत्व है।

भरत जी द्वारा कामदगिरि में नदियों का दर्शन

विरजाकुण्ड-

भरत जी जब मन्दाकिनी स्नान कर परिक्रमा करने लगे तब उन्हे कुछ आश्चर्य दिखायी दिया उनमें विरजा गंगा, सरयू, यमुना, ताम्रपर्णी, कावेरी, नर्वदा, प्रयागराज, चन्दभागा, शतद्रुमा, सरस्वती, पयस्वनी, धर्मारण्य, गयापुरी, नैमिशारण्य आदि वन नदियों को देखा।

श्लोक-

जाहवी चैव कालिन्दी सरयू च कमलैर्वताम्।
सरस्वती शतद्रुं च चन्द्रभागा पयस्वनीम्॥

विरजां ताम्रपर्णी च कावेरी चैव नर्वदाम्।
प्रयागं नैमिषं चैव धर्मारण्यं गयां तथा॥

परम हंस आश्रम
Param Hans Ashram

गुप्त गोदावरी बाहरी दृश्य
Gupt Godawari Bahari Drishya

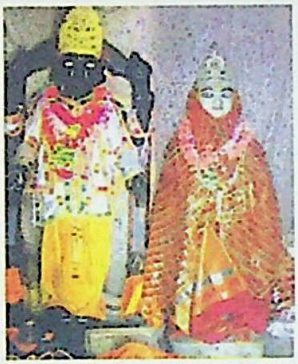

लक्ष्मी नारायण प्रमोद वन
Lakshmi Narayan

रघुवीर मंदिर जानकी कुण्ड
Raghuveer Mandir

रघुवीर मंदिर जानकी कुण्ड गेट
Raghuveer Mandir Gate

सती अनुसुइया गुफा
Sati Anusuya Gufa

स्फटिक शिला
Sfatik Shila

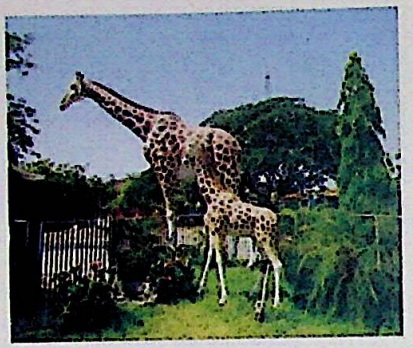

नन्ही दुनिया
Nanhi Duniya

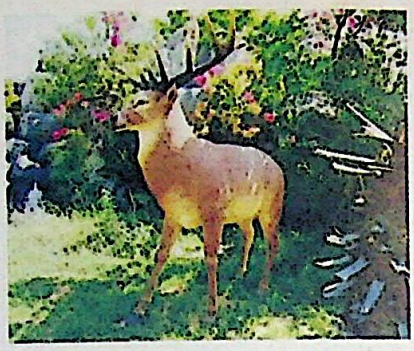

नन्ही दुनिया
Nanhi Duniya

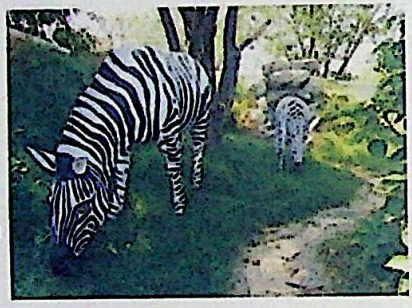

नन्ही दुनिया
Nanhi Duniya

विश्व विद्यालय गेट
Vishwa Vidyalya Gate

लैना बाबा सरकार मंदिर
Laina Baba Sarkar

राम लला मंदिर ब्रह्म कुंड
Ram Lalla Mandir Brahamkund

उपर्युक्त सभी नदियों के मात्र चिन्ह ही है ये सभी लुप्त हो गयी है यदा कदा कुछ जगहें जानी जाती है।

साक्षी गोपाल

यहाँ कृष्ण राधिका जी का विग्रह स्थापित है जो व्यक्ति यहाँ परिक्रमा करने आते है उसके यह साक्षी स्वरूप माने जाते है।

ब्रह्मकुण्ड

ब्रह्मकुण्ड परिक्रमा मार्ग के थोड़ी दूरी पर स्थित है जो पयस्वनी का उद्गम स्थान कहा जाता है जो बहुत ही पवित्र है। जहाँ ब्रह्मा जी ने रघुनन्दन भगवान के चरण धोकर पूजन किया। चरणों से दूध रूप होकर पयस्वनी नदी उत्पन्न हुई है।

पूजनं कृतवान सम्यक सर्वलोक हिताय च।
नारायस्य चरणात्पयो रूपा पयस्वनी॥

पयस्वनी नाम गंगा ब्रह्मकुण्डें समागता।
तदा विधातु कुंडेति नाम्ना स्वातित्वमागतः॥

लक्ष्मण पहाड़ी

कहा जाता है कि इस लक्ष्मण पहाड़ी में श्रीराम के अनुज भ्राता लक्ष्मण जी धनुष लेकर सुरक्षा संभाले हुये यहाँ सावधान होकर बैठे वीरासन पर थे और श्रीराम शयन करते थे यहाँ पर एक मंदिर तथा एक कूप है

कछुक दूरि धरि वाण शरासन।
जागन लगे बैठि वीरासन॥

भरत मिलाप

यह पावन स्थली दर्शनीय बन्दनीय चित्रकूट की धरोधर परिक्रमा मार्ग के दक्षिणी भाग पर स्थित है जहाँ भरत जी भगवान श्रीराम से मिले थे जिनके अश्रु प्रवाह से पत्थर भी पिघल गये थे जो आज भी दृष्टव्य है।

बरबस लिये उठाई उर लाये कृपा निधान।
भरत राम की मिलनिलखि सिरे सवै अपान॥

पीलीकोठी

यह सन्यासी महात्माओं का स्थल है जहाँ संत निवास करते है यहाँ स्वर्गीय अखण्डानन्द महाराज की मूर्ति देखने योग्य है वर्तमान में श्री दिव्यानन्द जी महाराज इस स्थान का संचालन करते है।

रामशैया

यह स्थल पीलीकोठी से 4 कि.मी. पर छोटी मढ़िया है यहाँ बड़ी चट्टान है जहाँ राम जानकी शयन करते थे यहाँ चरण चिन्ह भी देखने को प्राप्त है रामशैया दर्शन से लोग साकेत धाम प्राप्त करते है।

श्लोक-

रामशय्या नरो दृष्ट्वा रामलोकस गच्छति।
तस्या पूर्व दिशाभागे विश्रुतः साडंग पर्वतः॥ वृ.चि.म.

गौशाला

रामशैया पर गौशाला है जहाँ 100 गाये रहती है जिसे पटना (विहार प्रदेश) की संस्था गिरिधर श्याम फाउडेशन द्वारा संचालित किया जा रहा है।

वनदेवी आश्रम

हनुमानधारा से जाने के बीच ही यह 3 किमी० दूरी वन देवी का स्थान है जो चित्रकूट के तीर्थो में माना जाता है यह वृहद चित्रकूट महात्म्यम् में उल्लेख है यह वन देवी राम लक्ष्मण सीता की रक्षक देवी के रूप में है यहाँ 24 प्रकार के चरण चिन्ह अंकित है।

हनुमान धारा

हनुमान धारा पुराने सतना बस स्टैण्ड से 4 कि.मी. दूरी पर संकर्षण पर्वत पर हनुमान जी की एवं शिव जी की मूर्ति विद्यमान हैं जो 767 सीढ़ी चढ़ने के बाद यह स्थान पर पहुँचा जाता है दाहिने उक्त स्थल पर हनुमान जी भुजार पाताल गंगा जलधारा गिरती है। यह स्थान भी चित्रकूट तीर्थ में आता है यह बनावटी न समझें।

यत्र पाताल गंगा या पावनी पाप कारिणाम्।
दक्षिणाडे हनुमतः पपात भुवनेश्वरी॥

स्नात्वा पाताल गंगाया पूजियित्व हरीश्वरम्।
दानं दत्वा द्विजातिभ्यः सर्व पापै प्रमुच्यते॥

वैशाख शुक पैरोमास्यां सामतसरी समृता।

यहाँ प्राणियों को पवित्र करनेवाली पाताल गंगा में वैशाख शुल्क पूर्णमासी को स्नान करने से सभी पापों से मुक्ति प्राप्त होती है।

सम्पूर्ण चित्रकूट

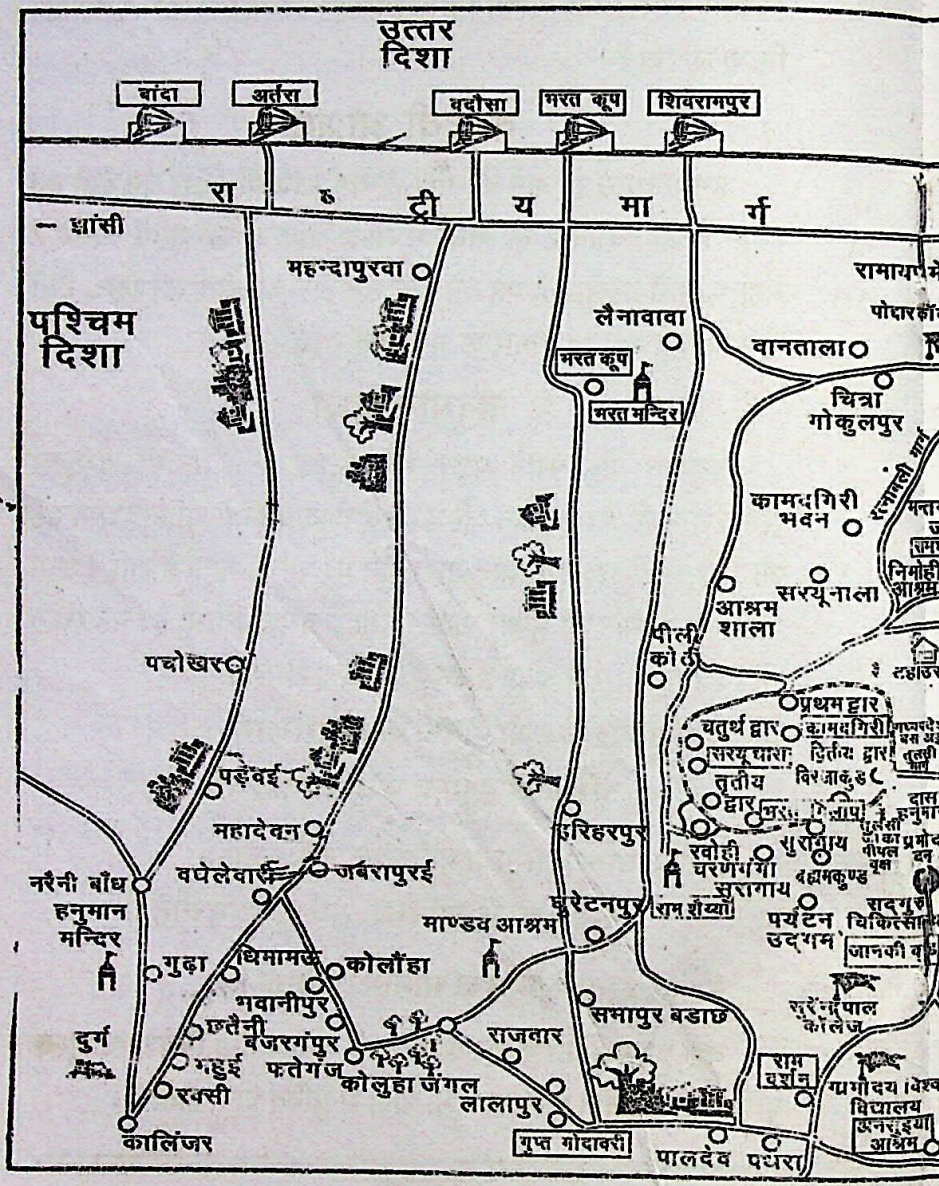
उत्तर दिशा
बांदा
अर्तरा
बदौसा
भरत कूप
शिवरामपुर
रा ष्ट्री य मा र्ग
झांसी
पश्चिम दिशा
महन्दापुरवा
लैनावावा
भरत कूप
भरत मन्दिर
वानताला
चित्रा गोकुलपुर
कामदगिरी भवन
सरयू नाला
आश्रम शाला
पचोखर
पड़वई
महादेवन
नरैनी बाँध
हनुमान मन्दिर
वघेलेवाड़ी
जबरापुरई
गुढ़ा
धिमामऊ
कोलौहा
भवानीपुर
छतैनी
वजरगंपुर
गहुई
फतेगंज
रवसी
कोलुहा जंगल
लालापुर
राजवार
दुर्ग
कालिंजर
गुप्त गोदावरी
पालदेव पथरा
सभापुर बडाछ
माण्डव आश्रम
घुरेटनपुर
उरिहरपुर
प्रथम द्वार
चतुर्थ द्वार
सरयू धारा
तृतीय द्वार
द्वितीय द्वार
रवोही
चरणगंगा
सुरागाय
ब्रह्मकुण्ड
पर्यटन उद्यम
सुरेन्द्रपाल कालेज
राम दर्शन
गुप्तगोदाय विश्व विद्यालय
अनसूइया आश्रम

दर्शन मानचित्र

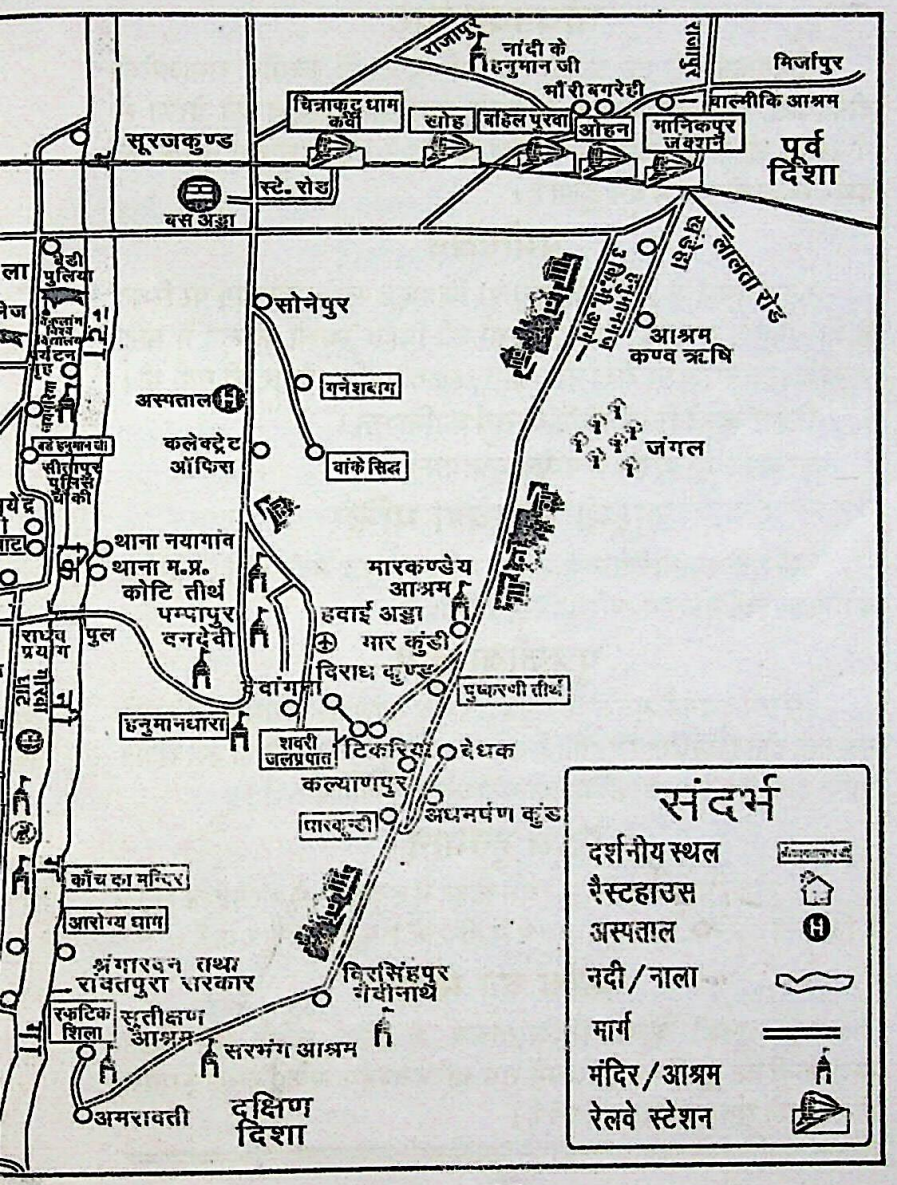
नांदी के हनुमान जी
मौरी बगरेही
मिर्जापुर
वाल्मीकि आश्रम
चित्रकूट धाम कर्वी
खोह
बाहिल पुरवा
ओहन
मानिकपुर जंक्शन
पूर्व दिशा
सूरजकुण्ड
स्टे. रोड
बस अड्डा
सोनेपुर
आश्रम कण्व ऋषि
गनेशबाग
अस्पताल
कलेक्ट्रेट ऑफिस
बांके सिद्ध
जंगल
थाना नयागांव
थाना म.प्र.
कोटि तीर्थ
पम्पापुर
वनदेवी
मारकण्डेय आश्रम
हवाई अड्डा
मार कुंडी
विराध कुण्ड
पुष्करणी तीर्थ
दांगा
हनुमानधारा
शबरी जलप्रपात
टिकरिया
देधक
कल्याणपुर
अधमर्षण कुंड
पारवन्ती
काँच का मन्दिर
आरोग्य धाम
श्रृंगारवन तथा रावतपुरा सरकार
विरसिंहपुर गंगीनाथ
स्फटिक शिला
सुतीक्ष्ण आश्रम
सरभंग आश्रम
अमरावती
दक्षिण दिशा
संदर्भ
दर्शनीय स्थल
रैस्टहाउस
अस्पताल
नदी/नाला
मार्ग
मंदिर/आश्रम
रेलवे स्टेशन

सीता रसोई

हनुमान धारा के ऊपर 100 सीढ़ी जाने के बाद सीता रसोई का स्थान मिलता है जहाँ सीता जी ने कन्दमूल फल का आहार निर्मित किया था।

गोयनका घाट

मन्दाकिनी के तट पर रामघाट के बगल में स्वर्गीय समाजसेवी दीनदयाल शोध संस्थान के संचालक नाना जी देशमुख की प्रेरणा से गोयनका जी ने इस घाट का निर्माण कराया है जो आधुनिक तरीके का दर्शन स्थल के रूप में बना हुआ है।

प्रमोदवन

यह रामघाट से 2 कि.मी. दूरी पर चित्रकूट सतना राजमार्ग पर स्थित है जो भगवान राम और माता जानकी की बिहार स्थली के रूप में माना जाता है। इस स्थान पर रीवां नरेश द्वारा 360 कोठिरिया तैयार की गयी थी।

विहारं कुतरे नित्यं कोटि कन्दर्प कान्तिभृत्।
तस्या ङिघ्रेरेणु र्यत्रैव पर्वत्व मुपागमत्॥

लक्ष्मी नारायण मन्दिर

यहाँ एक लक्ष्मी नारायण जी का मन्दिर है वृद्ध सदन म.प्र., तहसील कार्यालय इसी मंदिर के परिसर पर विद्यमान है।

पुत्रजीवा वृक्ष

इस प्रमोदवन में पुत्रजीवा (पुत्रदा) वृक्ष आज भी विद्यमान है जिसके पुत्र नही होते है अथवा मर जाते है वह वृक्ष की पूजा करता है तो उसे संतान प्राप्ति होती है। तथा उसकी मनोकामना की पूर्ति होती है।

दास हुनमान

यह स्थान प्रमोदवन के पश्चिम दिशा में हनुमान जी का पवित्र स्थान है जिसका उल्लेख चित्रकूट महात्म में तीर्थ के रूप में बताया गया है।

कांच का मंदिर

यह जानकी कुण्ड चिकित्सालय के ठीक सामने पूर्व दिशा मन्दाकिनी तट पर स्थित है जिसमें राम चरित्र दर्शाया गया जिसके निर्माण कराने वाले संत रामभद्राचार्य जी है।

मानस मंदिर

इस मन्दिर के पास लगा हुआ मानस मंदिर है जो वाराणसी की भाँति कठपुतलियों से रामचरित्र दर्शाया है यहाँ भी यात्री दर्शन करते है यह भी संत रामभद्राचार्य जी ने अपने भक्तों के द्वारा निर्माण कराया है।

रघुवीर मंदिर जानकी कुण्ड

यहाँ पर भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर है। जहाँ स्वर्गीय श्री रणछोड़ दास जी महाराज पूजा करते थे उन्हीं की प्रेरणा ने ट्रस्ट की स्थापना हुयी यही संस्कृत विद्यालय चलता है।

नेत्र चिकित्सालय जानकीकुंड

यह चिकित्सालय संत रणछोर दास जी के नाम का बना ट्रस्ट सद्गुरू सेवा संघ ट्रस्ट बम्बई संचालित करता है। जहाँ बच्चों का नेत्र चिकित्सालय तथा वृद्धों का चिकित्सालय अलग-अलग है। जों एशिया का द्वितीय चिकित्सालय के दर्जा प्राप्त करने में संलग्न है। यहाँ सामान्य चिकित्सालय, के दर्जा प्राप्त करने में संलग्न है। यहाँ सामान्य चिकित्सालय, माध्यमिक एवं संस्कृत विद्यालय तथा गौशाला का कार्य भी अच्छे ढंग से चल रहा है।

जानकी कुंड

श्लोक-

सरसानि सहस्त्राणि तस्य तीर द्वयोरपि।
सन्ति नित्यं विहारार्थे जानकी रामचन्द्रयोः॥
तस्य दक्षिणभागे च सीता कुंड विराजते।
यत्र श्री रामचन्द्रो असौसीतया सहितः सुधीः॥

श्री सीताराम जी के विहार के वास्ते मन्दाकिनी के दोनो ओर रसवत्यदार्थ हजारोंस्थित है। मुक्ता वद्ध तट द्वया इत्यादि पदों से श्री जानकी कुंड के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

जानकी कुण्ड के दर्शन पुण्य पुञ्ज प्राणी को होता है वही पापियों के लिये अदृष्ट हो जाता है यहाँ नदी में मछलियों का दृश्य मनोरम है यह प्रमोद वन से 2 किमी. दूरी पर है।

स्फटिक शिला

यह स्थान जानकी कुण्ड से 1 कि.मी. दक्षिण वृक्षों के बीच प्यस्वनी किनारे स्थित है एक चट्टान जल के मध्य ऊँची स्थिति में दिखाई देती है। जहाँ माता जानकी के पैर में इन्द्र पुत्र जयन्त कौवे का रूप धारण करके चोंच का प्रहार किया था जिसके चिन्ह आज भी देखने को प्राप्त है स्फटिक शिला स्फटिक मणि के सदृश्य होने के कारण अपना नाम सुशोभित किय है। उक्त संदर्भ में गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते है।

एक वार चुनि कुसुम सुहाये,
निज कर भूषण राम बनाये ।

सीतहि पहिराये प्रभु सादर,
बैठे स्फटिक शिला पर सुन्दर ।।

तदगे कृत शोचेति तीर्थम्यातके नाशनम्।
दिव्यं स्नानकृतम्पुरा तस्मिन हंसेनदेवेन।।

श्लोक-

स्फटिक शिला यत्र वर्तते लोक पावनी।
तस्यां शिलायां चरण दक्षिण शिला विद्यते शुभम्।।

सुर पति सुत धरि वायस वेष।
शठ चाहत रघुपति वल देखा।।

सीताचरण चोच हत भागा,
मूढ़ मन्दमति कारण कागा।

चला रुधिर रघुनायक जाना,
सीक धनुष सायक सन्धाना।।

यहाँ सीता जी के चरण भी दर्शनीय है। तथा यहाँ हंस भगवान ने स्नान किया था।

पंजाबी भगवान आश्रम

यह स्थान जानकी कुडं के पार्श्व में विद्यमान है जहाँ स्वर्गीय संत पंजाबी भगवान का स्थान है। जहाँ संकट मोचन हनुमान की विशाल मूर्ति दर्शनीय है।

संकट मोचन हनुमान
पंजाबी हनुमान

पंचमुखी शंकर

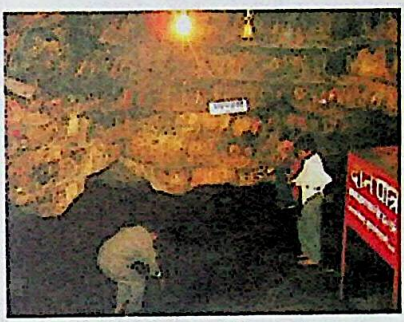

गोदावरी कुण्ड

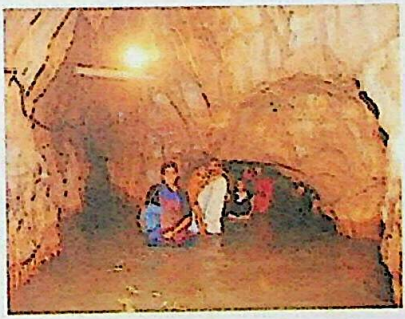

गोदावरी पानी गुफा

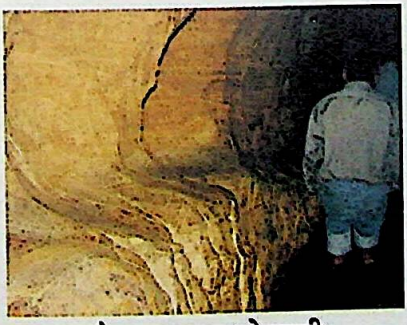

शैशा अवतार गोदावरी

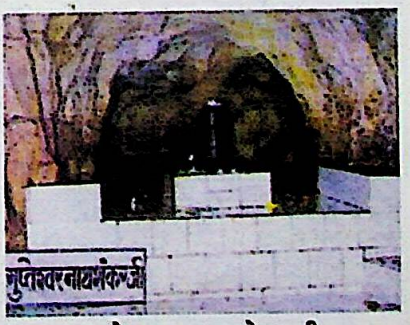

गुप्तेश्वर नाथ गोदावरी

मानस मंदिर प्रमोद वन
Manas Mandir Pramod Van

गणेश बाग
Ganesh Bagh

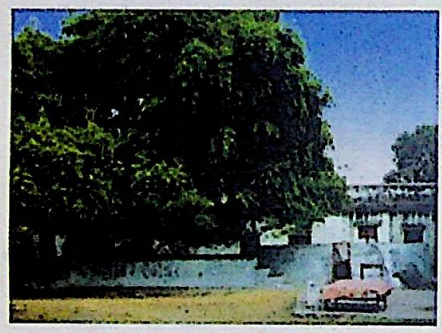

पुत्र जीवन ब्रछ
Putra Jiwa Brachh

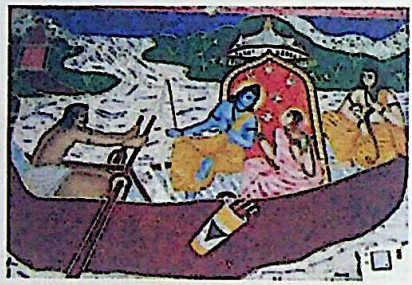

कांच चित्र प्रमोद वन
Kanch Photo

पंच मुखी हनुमान धारा
Panch Mukhi Hanuman Dhara

कांच मंदिर प्रमोद वन
Kanch Mandir Pramod Van

श्रृंगार वन (सिरसावन)

श्रृंगारवन (सिरसावन) यह वन जानकी कुंड से 1 किमी. की दूरी पर सतना रोड पर स्थित है। यहाँ प्राकृतिक श्रृंगार सामग्री से जानकी जी ने अपना श्रृंगार किया था। अस्तु तभी यह श्रृंगार वन के नाम से जाना जाता है।

आरोग्य धाम

यह आयुर्वेदिक चिकित्सालय दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा रतन टाटा जी की सहायता से स्थापित है जहाँ जड़ी-बूटियों के द्वारा रोगों का निदान किया जाता है। यह भी श्री नाना जी देशमुख की प्रेरणा का परिणाम है।

चित्रकूट (ग्रामोदय विश्वविद्यालय)

इस विश्व विद्यालय की स्थापना म.प्र. सरकार द्वारा 1990 में माननीय नाना जी देशमुख के प्रयासों से की गयी हैं इस में 13 शंकाय स्थापित किये गये है जहाँ विभिन्न प्रदेशों के छात्र अध्ययन कर रहे है।

राम दर्शन

चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के गेट समक्ष रामदर्शन जहाँ श्री राम कथा से सम्बन्धित दृश्य श्री मगतुराम जयपुरिया की ओर से कलात्मक ढंग से तैयार किया गया है जो जनता के देखने योग्य है।

नन्ही दुनिया

यह भी दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट की देन है जो रामदर्शन के ही समीप बच्चों के मनोरंजन के लिये बनाया गया है जहाँ वन्य पशुओं एवं अन्यान्य दृश्य जो जीता जागता स्वरूप है। जहाँ बहुत से लोग जाते है और बच्चों का मनोरंजन कराते है।

अनुसुइया आश्रम

यह रामघाट से 14 कि.मी. की दूरी पर घने जंगलों के मध्य यह एक मनोहारी तपस्थली है। जहाँ पर प्राचीन मन्दिर अविकथित स्थित में तथा नवीन मन्दिर आधुनिकता से परिपूर्ण विकसित रूप में दृष्टिोचर होता है। यही साकेतवासी परमहंस जी महाराज का भव्य आश्रम है।

यह महर्षि अत्रि की तपस्या भूमि है जहाँ पुत्र की कामना से उन्होंने महान तपस्या किया और विष्णु, ब्रह्मा महादेव ने दर्शन एवं वरदान देकर चले गये थे। अतः महादेव के अंश से दुर्वासा, ब्रह्मा के अंश से चन्द्रमा एवं विष्णु के अंश से दत्तात्रय उत्पन्न हुये।

श्लोक-

त्रयम्वकां शाच्च दुर्वासा, धातुरं शाच्च चन्द्रमा।

दत्तात्रेया, हरेरंशादेव, पुत्राभवन शुभा॥ वृ.चि.म.।

इसके बाद अनुसुइया जी द्वारा गंगा की प्रार्थना करने का गंगा जी मदराचल पर्वत से निकल पड़ी।

इति स्तुता तदा देवी श्री देव्या करूर्णतया।

निःस्त्रता सा तत्र गंगा मदलाचल मूलतः॥

गुप्त गोदावरी

यह स्थान रामघाट से 20 किमी. दूर सतना चित्रकूट राजमार्ग में स्थित है। इसकी प्राकृतिक वैचित्रता हर किसी यात्री को आकर्षित करती है।

भगवान श्री राम के निवास के लिये देवताओं ने पूर्व व्यवस्था कर लिया था। गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते।

दोहा-

प्रथमहि देवहि गिरि गुहा राखी रूचिर वनाय।
रामकृपा निधि कछुक दिन वास करि है जाय॥

यहाँ पर गुप्त गोदावरी गुप्त रूप से वह रही है और आगे लुप्त हो जाती है। यहाँ का दृश्य हर किसी पर्यटक को लुभाने (आकर्षक) बाला है यहाँ पर्वतीय भाग में दो प्रकार के कुंड है एक गर्म एक ठण्डा है।

यही एक जानकी कुंड है जहाँ जानकी जी स्नान के समय खटखटा चोर (राक्षस) कपड़े उठा ले गया था।

जिसे लक्ष्मण जी ने बाण से मारकर गुफा में उल्टा लटका दिया था जो आज भी पाषण स्वरूप देखने को मिलता है इस गुफा से निकलने के बाद दूसरी गुफा जो धनुषाकार है।

जब श्री राम जी यहाँ आये उन्होंने नासिक से बाण गोदावरी को खींचकर यहाँ प्रकट किया इसी से इसका नाम गुप्त गोदावरी पड़ा।

विवुध विपिन जहुँ लगि जग माही,
देखि राम वन सकल सिराही।

सुरसरि सर सई दिनकर कन्या,
मेकल सुता गोदावरि धन्या॥

श्लोक-

तस्मिन गोदावरी पुरण्या, नदी पाप प्रमोचनी।
गुप्त गोदावरी नाम्ना ख्याता पुण्य, विवर्धन॥

उस तुगांरण्य पर्वत में पुण्यो को वृद्धि करने वाली गुप्त गोदावरी नदी है।

विराध कुंड

यह स्थल सती अनुसूइया के आगे 6 कि.मी. दूरी पर स्थित है। जहाँ लक्ष्मण जी ने गढ़ढा खोदकर विराज राक्षस को गाड़ दिया था। इसकी गहराई का आज तक पता नहीं चल सकता कि कितना गहरा है। दूसरा मार्ग आने का मानिकपुर इटारसी रेलवे लाइन पर टिकरिया गांव से 2 कि.मी. है।

सरभंगा आश्रम

मानिकपुर इटारसी रेलवे लाइन पर सतना स्टेशन से पहले जैतवारा उतरना पड़ता है। जैतवारा से विरसिंहपुर को बस जाती है। यहाँ एक बड़ा सरोवर है। और शिवजी का प्राचीन मंदिर है। विरसिंहपुर के आगे 14 कि.मी. में सरभंगा आश्रम है। जहाँ एक कुंड है जहाँ जल नीचे से आता है महर्षि सरभंगा जी ने श्रीराम के सामने

अपना शरीर त्याग कर मोक्ष प्राप्त किया था इसको गोस्वामी जी ने इस प्रकार लिखा है –

सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तन श्याम,
मम हिय बसहु निरन्तर सगुन रूप श्री राम।

असि कहि जोग अगिन तनु जारा।
राम कृपा बैकुण्ठ सिधारा॥

पंचमुखी हनुमान धारा

यह स्थान हनुमान धारा स्थान के पास में ही विद्यमान है जो पर्वत के ऊपरी भाग पर पंचमुखी हनुमान के नाम से जाना जाता है। जो अत्यधिक दर्शनीय है।

कोटितीर्थ

यह स्थान संकर्पण पर्वत पर देवागंना से उत्तर 2 कि.मी. दूरी पर स्थित है। इस पर्वत पर कोटितीर्थ है। इसका प्राकृतिक दृश्य बहुत सुन्दर है। एक झरना बाहर है जिसका जल वहाँ पर्वत में विलीन हो जाता है। कहा जाता है जब श्री राम चित्रकूट पधारे थे तब उनके दर्शन हेतु करोड़ो देवता देवलोक से इसी स्थान पर रूके थे।

कोटितीर्थ नरः स्नातवा गो सहस्त्रफलं लभेत।
पुरायत्र द्विज श्रेष्ठः कोटि संख्या मुनीश्वरा॥

अर्थात कोटि तीर्थ में स्नान कर प्राणी सहस्त्र गोदान का फल प्राप्त करता है जहाँ एक करोड़ मुनीश्वर निवास करते थे।

बॉके सिद्ध

गणेश बाग के 3 कि.मी. दक्षिण पूर्व हरे भरे विध्यपर्वत के पास में स्थित बांके सिद्ध अपने प्राकृतिक सौंदर्यता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ देवताओं द्वारा निर्मित गुफाये अपूर्व चातुरी के साथ बनायी गयी है जो धरातल से सैकड़ों फिट नीचे है। गुफा तक पहुँचने के लिए सीढ़ी बनी है और कुन्ड का स्वच्छ जल बहता रहता है तथा वृक्ष के पास विलीन हो जाता है।

यत्र श्री पार्वती नाथः सिद्ध रूपो विराजते।
मुनीश्वराणां सर्वेषां सिद्धदाता महात्मनाम्॥

देवांगना

यह स्थान कोटितीर्थ से 2 कि.मी. दक्षिण में कर्वी से 6 कि.मी. दूरी पर मिलता है जहाँ देवताओं की पत्नियाँ (देवियाँ) आकर रूकी थी। इसके अलावा मेनका अप्सरा द्वारा यहाँ तक किया गया था कि उसी के तप के प्रभाव से सरस्वती नदी का प्राकट्य हुआ था। इस प्रकार यह स्थान देवांगना के नाम से एक तीर्थ है।

तपस्तेपे पुरा तत्र मेनका नाम विश्रुता।
ब्रह्मा देवो देवगणा वरं तस्यै तदा ददुः॥

सरस्वती पुण्यलमभा नदी त्रैलोकय पावनी।
समुद्भूता पुण्यतमा महापातक नाशनी॥

गणेश बाग

यह स्थान (तीर्थ) कर्वी से 2 कि.मी. दक्षिण ऐतिहासिक धरोहर

जिसे लोगों ने मिनी खजुराहों का दर्जा दिया है वास्तव में यह गणेश तीर्थ है जो चित्रकूट महात्यम् में बताया गया है यहाँ राम क्रीडज्ञ की मूर्ति दृष्टव्य है। इसे उन्नीसहवी शताब्दी में पेशावा राव ने बनाया था।

बाल्मीकि आश्रम लालापुर

कर्वी से 18 कि.मी. चित्रकूट से 25 कि.मी. दूर महर्षि वाल्मीकि आश्रम शिलापुरी पर्वत पर स्थित है। यहाँ पहुँचने के लिये 360 सीढ़ी से आराम से पहुँचा जा सकता है। बाल्मीकि जी का मन्दिर 500 वर्ष पुराना बना हुआ है। जो 150 फिट लम्बी 150 फिट चौड़ी चट्टान पर बना हुआ है। मंदिर के नीचे तपस्या गुफा है। जहाँ सातवी और ग्यारवीं शताब्दी की किंचत जीवन चरित्र की 30 मूर्तियाँ आकर्षक है। सीता रसोई, पद चिन्ह. एवं भित्त चित्र दर्शनीय है।

चित्रकूटोपरि साक्षात् शिलपुरी नाम पर्वतः।
शिलासु तत्रे बहुशः उपला लाघव स्तथा ॥

वाल्मीकेराश्रमं विद्ध सर्व पातक नाशनम्।
ईशान कोणों यच्छृडगें मणिरत्ना समर्चितम् ॥

पूर्वस्या दिशि यच्छगं नाना धातु विराजितम्।
तस्य श्रृडगें मुनिनां तु साश्रमान श्रृणु पुण्यदान ॥

च्यवनस्याश्रमं विद्धं दर्शनात्पातकापहम्।
तत्रात्पेनैव सिद्धयन्ति पुरुषाः तपसा विभो ॥

तुलसी तीर्थ राजापुर

चित्रकूट से 36 कि.मी. की दूरी पर स्थित है यहाँ बस, जीप साधन से पहुँचा जाता है। यह यमुना तट में गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि है। जिन्होंने रामचरित मानस की रचना की थी जिसके दर्शन आज भी कर सकते है हस्त लिखित मानस सुरक्षित है यही 1917 में तुलसी स्मारक सभा की स्थापना की गयी थी तथा यमुना घाट भी बन गया है। 2011में राजापुर से महेवा जोड़ने वाले पक्के पुल का निर्माण हो चुका है जहाँ से आना जाना साधनों से होता है। यहाँ थाना भी है बाजार लगता है।

नॉदी के हनुमान जी

यह राजापुर से 8 कि.मी. दूरी पर नॉदिन ग्राम संकट मोचन हनुमान मंदिर है। कहा जाता है गोस्वामी तुलसी दास जी नित्य प्रति इनकी पूजा करने जाते थे। इन्ही की कृपा से भगवान के दर्शन तुलसी दास जी ने प्राप्त किया था और ख्याति को प्राप्त किया।

सूर्य कुंड

यह तीर्थ चित्रकूट रामघाट से 8 कि०मी० उत्तरदिशा की ओर बेड़ी पुलिया से मार्ग जाता है जो मन्दाकिनी तट पर स्थित है। सूर्य कुण्ड में स्नान करने का फल है जो चित्रकूट महात्म मे लिखा है। कि वह प्राणी सूर्य लोक को जाता है।

श्लोक-

सूर्य कुण्डे नरः स्नात्वा सूर्य लोकं सगच्छति।
तस्यैव निकटे विप्र कन्या तीर्थ विराजते ॥वृ.चि.म.खण्ड 11

कामदगिरी पर्वत
Kamadgiri Pravat

भरत कूप
Bharat Koop

राम शैया Ram Shaiya

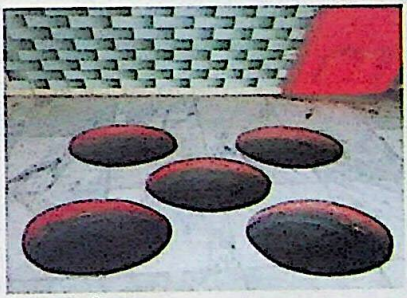

कुबेर कुण्ड Kuber Kund

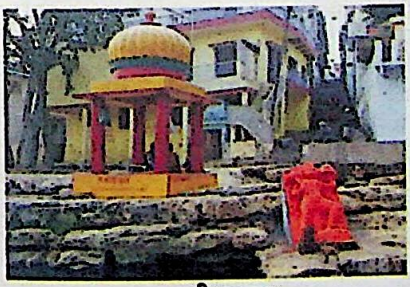

जानकी कुण्ड
Janki Kund

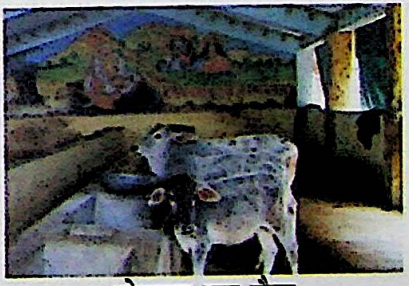

गोशाला राम शैया
Goshala Ram Shaiya

शारदा देवी मैहर
Sharda Devi Maihar

भरत मिलाप Bharat Milap

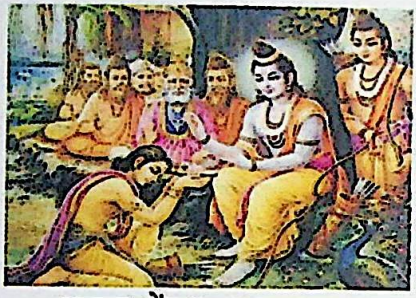

पादुका भेंट Paduka Bhet

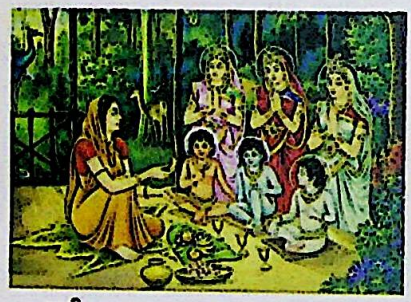

सती अनुसुइया Sati Anusuya

सती अनुसुइया Sati Anusuya

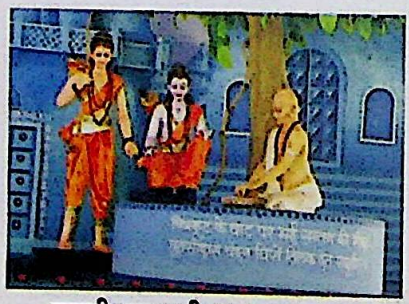

तुलसी दास जी Tulsi Das Ji

बन्दरों का दृश्य Bandaro Ka Drashaya

माण्डव्य ऋषि आश्रम

गुप्त गोदावरी से 4 कि.मी. दूर माण्डव्य ऋषि का परम प्राचीन आश्रम मड़फा के नाम से जाना जाता है यहाँ पंचमुखी भगवान शंकर जी की प्रतिमा स्थापित है। पहाड़ी से कई झरने झरते हुये सुशोभित होते है।

सुतीक्षण आश्रम

यह स्थान विरसिंहपुर से 22 कि.मी. आगे पड़ता है यहाँ एक राम मंदिर है महर्षि अगस्त जी के शिष्य सुतीक्षण भव बन्धन से मुक्त होने के लिए मार्ग में राम लक्ष्मण सीता के दर्शन हेतु अचल होकर बैठ गये थे और जब वह आये तब वह दण्डवत प्रणाम किया।

भरतकूप

चित्रकूट से भरतकूप 20 कि.मी. दूरी पर स्थित है जहाँ बस द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है यहाँ द्रोणाचल नाम का पर्वत है जिस कूप में सम्पूर्ण गंगाओं के सहित समुद्र निवास करते है जहाँ भरत जी की प्रार्थना श्री राम ने नहीं स्वीकार किया तभी वह राज्याभिषेक की सम्पूर्ण सामग्री कूप में छोड़ दिया।

यथा –

समुद्रा यत्र चत्वारो निवसन्ति सगड़ंकाः
तदा गृहीत्वा सामग्रीः कूपे प्रक्षिप्तवान ॥ वृ.चि.म.

गोस्वामी जी लिखते है–

भरतकूप अब कहहि सब लोगा।
अति पावन तीर्थ जल जोगा।

लैना बाबा सरकार

यह मंदिर भरतकूप के समीप है जहाँ हनुमान जी का विग्रह रेल लाइन के सर्वे के समय प्राप्त हुये तभी से इनकी पूजा अर्चना होती है।

कालीजर शिवलिंग भूमि

इतिहास प्रसिद्ध कालीजर स्थान यद्यपि चित्रकूट से पश्चिम से 36 कि.मी. की दूरी पर ऐतिहासिक (किला) दुर्ग है। जहाँ भगवान शिव की एकादश लिगों में एक लिंग है। इसकी महिमा पुराणों में वर्णित है। यहाँ राजा कीर्ति सिंह के शासन काल में शेरशाहसूरी ने आक्रमण किया था किन्तु बारूद में आग लग जाने से वह मृत्यु को प्राप्त हो गया फिर राज रामचन्द्र सिंह के समय में सन् 1869 ई. में अकबर ने अजेय दुर्ग में आक्रमण किया और उसे नष्ट भ्रष्ट कर दिया यहाँ मुख्य दर्शनीय स्थल सीता सेज, सीताकुंड, पाताल गंगा, भैरवनाथ की मूर्ति, मृगधारा, सिंह की गुफा, भैरव की मढ़िया, महादेव कुण्ड, बाराह भगवान की मूर्ति, बुन्देलो का राजमहल आदि दर्शनीय स्थल है। कालीजर चित्रकूट महात्म्यम् में वर्णित तीर्थो में तीर्थ हैं।

कालजरं प्रमासञ्च तथा बदरिकाश्रमः
महालयस्तवोडारं क्षेत्रं वै पुरूषोत्तम्।

यहाँ बाँदा से नरैनी होकर और अतर्रा से नरैनी होकर कालीजर

पहुँचा जाता है यहाँ पुलिस थाना भी है ये सभी दर्शनीय स्थल पर्वत के ऊपरी भाग पर स्थित है।

शारदा देवी मंदिर

चित्रकूट से 120 कि.मी. दूर मैहर नामक स्थान पर पर्वत पर शारदा देवी का मंदिर स्थापित है। इस मन्दिर में पहुँचने हेतु 500 सीढ़ी चढ़ना पड़ता है यहाँ चित्रकूट से सतना होकर पहुँचा जा सकता है तथा चित्रकूट धाम कर्वी रेलवे स्टेशन से महाकौशल एक्सप्रेस से पहुँचा जा सकता है तथा रोपेड (उडन खटोला) पर्वत के ऊपर जाने की सुविधा हैं।

शक्तिपीठों के 51 पीठों में इसकी गणना है। भगवान विष्णु द्वारा सती के टुकड़े सुदर्शन चक्र से कर देने पर जो पृथ्वी पर पड़े वही पीठ हो गया यहाँ कंठ गिरा था चंदेल वंशीय आल्हा नित्यप्रति देवी की पूजा करने आता था।

चित्रकूट के परम्परागत त्योहार

अमावस्याः-

कामदगिरि की परिक्रमा अमावस्या को अश्वमेघ का फल प्राप्त होता है।

अश्वमेधा फलं प्राप्ति गतिं च परमा वृजतां
अमावस्या पौणमस्यां सर्व देव महर्षयः।

इसी कारण अमावस्या के दिन वन पर्वत, नदियां तीर्थ मन्दाकिनी में स्नान कर एक साथ परिक्रमा करते है। उसी परम्परा से आज भी यात्रीगण, भक्तगण परिक्रमा लगाते है।

श्रावण मास में झूलोत्सवः-

श्रावन के महीने प्रत्येक मंदिर में भगवान को झूला में रखा जाता है, दूर-दूर से संगीतज्ञ, वादक, गायक आदि भक्त जन इस महोत्सव में सम्मलित होते हैं तथा झूलोत्सव का आनन्द लेते है।

जन्माष्टमीः-

भगवान श्री कृष्ण का जन्मोत्सव भादों के महीने की कृष्ण जन्माष्टमी को बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है इसे छः दिन तक चलाते है।

विवाह पंचमीः-

विवाह पंचमी मार्ग शीर्ष (अगहन) मास की अमावस्या के बाद श्री राम को दूल्हा के रूप में सजाकर बारात निकालते है और कोई जानकी की ओर से भक्त बारात का स्वागत करते है तथा विवाह के सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न किये जाते है।

राम नवमीः-

चैत्र राम नवमी के दिन भगवान श्री राम का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। भक्तगणा कुछ फलाहारी भी रहते है।

जल विहारः-

इस त्योहार को भादों के महीने की एकादशी को मनाया जाता है जिसमें देवताओं की मूर्तियों को सजाकर मंदाकिनी नदी में नौका में घुमाया जाता है। भक्तगण ककड़ी खीरा का प्रसाद वितरण करते है।

रथ यात्राः-

इस उत्सव को आषाढ़ मास की प्रतिपदा को भगवान को रथ में बिठाकर भक्तगण उसे खीचतें है इस उत्सव के उपलख्य में रासलीला, रामलीला, नृत्य आदि मनोहारी कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते है।

रामायण मेलाः-

रामकथा को आधार बनाकर डा. राम मनोहर लोहिया की परिकल्पना के आधार से रामायण मेला समिति देश के कोने-कोने के विभिन्न रामायण के विद्धानों को आमंत्रित करती है जो प्रवचन करते है तथा रामलीला, रासलीला, कत्थक नृत्य, ओड़सी नृत्य, कठपुतली एवं सरकारी स्तर से भेजी गयी केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा सांस्कृतिक पार्टियों के कार्यक्रम प्रस्तुत होते है।

गुरु-वदना

ॐ श्री सद्गुरुदेव भगवान की जय

जय सद्गुरुदेवं, परमानन्दं, अमर शरीरं अविकारी
निगुर्ण निर्मूलं, धरि स्थूलं, काटन शूलं भवभारी जय सद्गुरु....
सुरत निज सोहं, कलिमल खोहं, जनमन मोहन छविभारी
अमरापुर वासी, सब सुख राशी, सदा एकरस निर्विकारी जय सद्गुरु....
अनुभव गम्भीरा, मति के धीरा, अलख फकीरा अवतारी
योगी अद्वैष्टा, त्रिकाल द्रष्टा, केवल पद आनन्दकारी जय सद्गुरु....
चित्रकूटहिं आयो, अद्वैत लखायो, अनुसुइया आसन मारी
श्री परमहंस स्वामी, अन्तर्यामी, हैं बड़नामी संसारी जय सद्गुरु....
हंसन हितकारी, जग पगुधारी, गर्व प्रहारी उपकारी
सत्-पंथ चलायो, भरम मिटायो, रूप लखायो करतारी जय सद्गुरु....
यह शिष्य है तेरो, करत निहोरो, मोपर हेरो प्रणधारी जय सद्गुरु....

UP चित्रकूट रेलवे समय सारिणी

ट्रेन न०	ट्रेन नाम	कहाँ से	कहाँ तक	आने का समय	जाने का समय	दिन
12189	महाकौशल एक्स.	जबलपुर	ह. निजामुद्दीन	23:17	23:19	प्रतिदिन
11108	बुन्देलखंड एक्स.	वाराणसी	ग्वालियर	1:03	1:08	प्रतिदिन
230	पेसेंजर	इलाहाबाद	झांसी	10:05	10:10	प्रतिदिन
12177	चंबल एक्स.	हावड़ा	आगरा कैंट	10:32	10:37	शनिवार
12175	चंबल एक्स.	हावड़ा	ग्वालियर	10:32	10:37	सोम, बुध, वीरवार
11070	तुलसी एक्स.	इलाहाबाद	लोकमान तिलक टर्मि.	18:24	18:27	सोम, बुध
5009	चित्रकूट एक्स.	जबलपुर	लखनऊ	1:40	1:45	प्रतिदिन
133	पेसेंजर	मानिकपुर	कानपुर	15:09	15:12	प्रतिदिन
218	मानिकपुर बांदा पेसेंजर	मानिकपुर	बांदा	1:37	1:42	प्रतिदिन
12447	सम्पर्क क्रांती एक्स.	मानिकपुर	हजरत निजामुद्दीन	17:55	17:58	सोम, बुध, शनि
18203	दुर्ग कानपुर एक्स.	दुर्ग	कानपुर	8:51	8:53	सोम, बुध
12536	गरीब रथ	रायपुर	लखनऊ	23:32	23:34	मंगल, शुक्र

DOWN

ट्रेन न०	ट्रेन नाम	कहाँ से	कहाँ तक	आने का	जाने का	दिन
12190	महाकौशल एक्स.	हजरत निजामुद्दीन	जबलपुर	3:58	4:00	प्रतिदिन
11107	बुन्देलखंड एक्स	ग्वालियर	वाराणसी	3:41	3:46	प्रतिदिन
229	पेसेंजर	झांसी	इलाहाबाद	13:19	13:22	प्रतिदिन
12178	चंबल एक्स.	आगरा कैंट	हावड़ा	13:35	13:37	सोम
12176	चंबल एक्स.	ग्वालियर	हावड़ा	13:35	13:37	मंगल, वीरवार, शनि
11069	तुलसी एक्स.	लोकमान तिलक टर्मि.	इलाहाबाद	5:52	5:57	सोम, बुध
15010	चित्रकूट एक्स.	लखनऊ	जबलपुर	23:52	23:57	प्रतिदिन
134	पैसेंजर	कानपुर	मानिकपुर	12:17	12:22	प्रतिदिन
217	बांदा मानिकपुर पैसेंजर	बांदा	मानिकपुर	23:28	23:30	प्रतिदिन
12448	सम्पर्क क्रांती एक्स.	हजरत निजामुद्दीन	मानिकपुर	8:42	8:45	सोम, बुध, शनि
18204	दुर्ग कानपुर एक्स.	कानपुर	दुर्ग	22:08	22:10	सोम, बुध
12535	गरीब रथ	लखनऊ	रायपुर	19:28	19:30	सोम, वीर

श्री मन्दाकिनी गंगा आरती

ॐ जय मन्दाकिन गंगे। मैया मन्दाकिनी गंगे।
सरस्वति सुचि सावित्री। पयस्वनी संगे। जय.....
पाप त्रिजाज विनाशिनि पावन जल धारा। मैया पावन
दरस परस मज्जन जन पावत भवपारा॥ जय.....
अत्रि प्रिया अनसुइया निज तप बल आनी
श्रुत पुराण सुर गावत, संतन की वानी। जय मन्दाकिनी.....
गोदावरी गायत्री यमुना कृष्णा कावेरी। मैया कृष्णा.....
सिन्धु सरस्वती गावे नित महिमा तेरी। ॐ जय मन्दाकिनी.....
सिय सौमित्र सहित प्रभु सेवत शुचि नीरे। मैया सेवत.....
चित्रकूट सब दिन वसि विहरत तब तीरे। ॐ जय मन्दाकिनी.....
भाव सहित यह आरति जो नर नित गावै। मैया जो नर.....
सुख सम्पत्ति घर आवै मन वांछित पावै॥ ॐ जय मन्दाकिनी.....
मन्दाकिनी गंगे मैया मन्दाकिनी गंगे।
सरस्वती शुचि सावित्री पयस्वनी संगे। ॐ जय मन्दाकिनी.....

महर्षि वाल्मीकि आरती

वाल्मीकि प्रभु आरति कीजै। कवि ज्ञानी के गुण ले लीजै॥
वाल्मीकि गुरू अद्भुद ज्ञानी। वरुण वंश जन्मे सब जानी॥
कीरत लाकी जनज न कीजै। वाल्मीकि प्रभु.....
प्राचेतस वाल्मीकि कहानी च्वन रूप्जन्मे यह ध्यानी॥
भक्ति ध्यान सेवन सब कीजै। वाल्मीकि.....
जके सुमरन बुद्धि प्रकाशै। राम कथा की गाथा भाषै॥
दर्शन बन्दन अर्चन कीजै। वाल्मीकि.....
आदिकरी भये वेद स्वरूपा। उपरहि भक्तिभाव भवकूपा॥
तन मन जन सब सुमिरन कीजै। वाल्मीकि.....
आश्रम ताकर पुण्य स्वरूप। सकल जगत मेंह अधिक अनूपा।
मन वांछित निज कारण कीजै। वाल्मीकि.....
आदिकवि जो आरती गावै। तर वैकुण्ठ परमपद पावै।
चन्द्र दत्त प्रभु शरण मे लीजै। वाल्मीकि.....

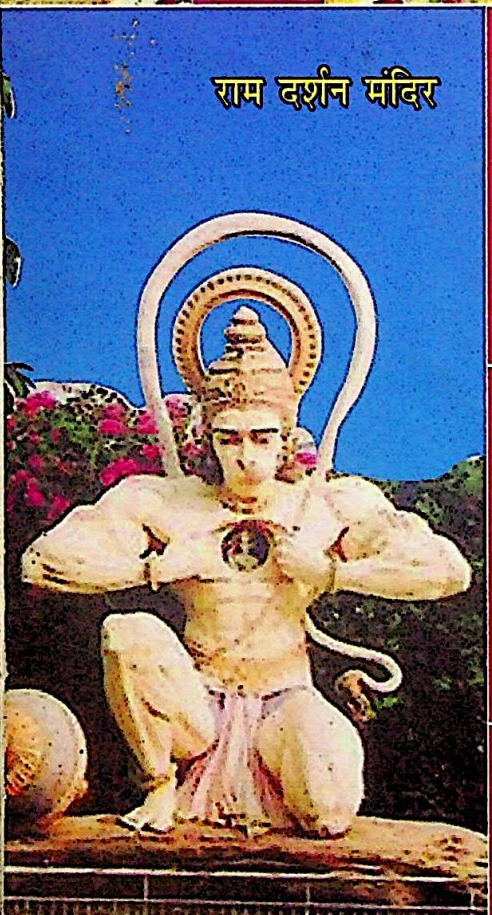

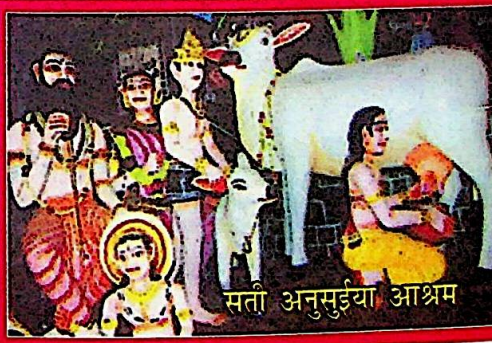

भरत सिंह बागरी

रतनावली मार्ग, कामदगिरी भवन के पास
चित्रकूट फोन नं. 7509527688